समय : २½ घंटे Hindi-Ancient and Medieval Poetry **पूर्णांक : ७५**

सुचना : १. सभी प्रश्न अनिवार्य है |
२. सभी प्रश्नों के लिए अंक समान है |

प्रश्न १. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पदों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिये | (३०)

क. पहिले करि परनाम नन्द सों समाचार सब दीजो।
औ वहाँ वृषभानु गोप सों जाय सकल सुधि लीजो |
श्रीदामा आदिक सब ग्वालन मेरे हुतो भेटियो
सुख-संदेस सुनाय हमारी गोपिन को दुख मेटियो ।
मंत्री एक बन बसत हमारो ताहि मिले सचु पाइयो ।
सावधान है मेरे हूतो ताही माथ नवाइयो ॥
सुन्दर परम किसोर बयक्रम चंचल नयन बिसाल ।
कर मुरली सिर मोरपंख पीतांबर उर बनमाल ॥

ख. जमुन तीर तेहि दिन करि बासू । भयेउ समय सम सबहिं सुपासू ॥
रातिहिं घाट घाट की तरनी। आईं अगनित जाहिं न बरनी ॥
प्रात पार भए एकहि खेवाँ । तोषे रामसखा की सेवाँ ॥
चले नहाइ नदिहि सिरु नाई । साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥
आगें मुनिबर बाहन आछें । राज समाज जाइ सबु पाछें ॥
तेहि पाछें दोउ बन्धु पयादें । भूषन बसन बेष सुठि सादें ॥
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा । सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा ॥
जहँ जहँ राम बास बिस्रामा । तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

ग. माई साँवरे रंग राँची ॥ टेक ॥
साज सिंगार बाँध पग घूँघर लोकलाज तज णाँची ॥
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ संगत स्याम प्रीत जग साँची।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची।
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची।
मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची ॥

प्रश्न २. निम्नलिखित दिर्घोत्तरी प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए | (३०)

च. सूरदास कृत भ्रमरगीत के काव्य-सौंदर्य को सोदाहरण समझाइए |
छ. अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए |
ज. मीरा के काव्य सौंदर्य का सोदाहरण वर्णन कीजिये |

प्रश्न ३. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए | (१५)

प. भ्रमरगीत के उद्धव |
फ. रामकाव्य धारा में तुलसीदास का स्थान |
भ. मीरा के काव्य में अभिव्यक्त विद्रोह |

6CFAB33BB10980A20606DA87DAC31685